

पञ्जाबी भाषा के नाम को 'गुर्जरगोत्र' में पेश हुई। बाद
पञ्जाबी भाषा के 'पञ्जाबी' किया गया है। विस्तृत विवरण
यदि प्रत्यक्ष से निरवाण जाकर शास्त्रिम विवेक
किया गया। पञ्जाबी भाषा के गुण होकर गणेश से
जाने लगे बाद तकनीक का विकास करते हैं।

उपखण्ड अधिकारी
उदयपुरवादी (गुर्जर)